आओ सिखे ....

ब्राम्हि लिपी

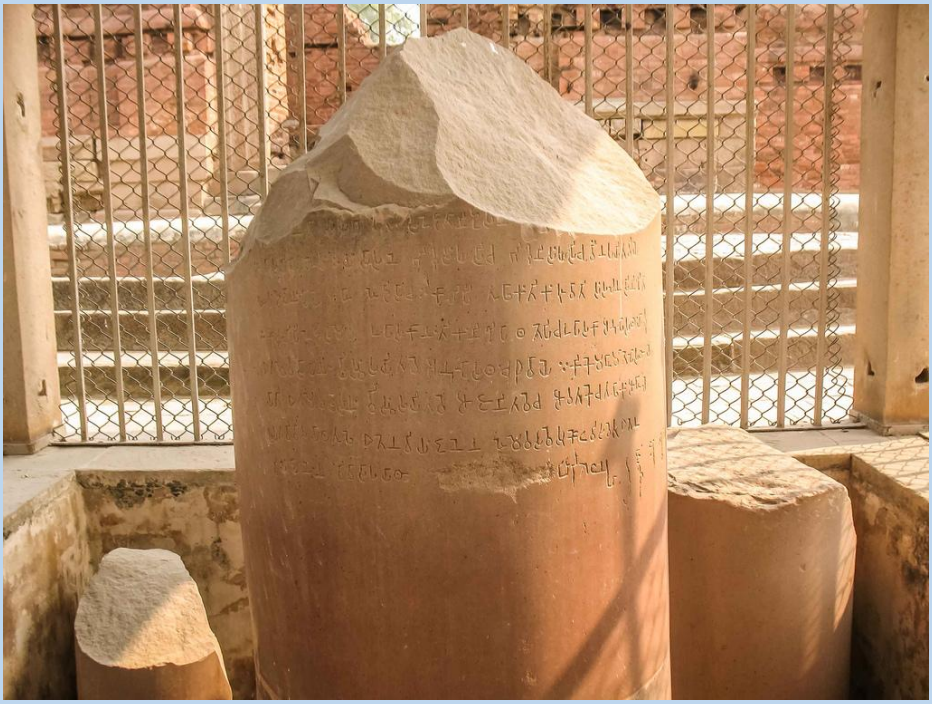

अशोक तपासे

पुरिस-दम्म प्रकाशन

आओ सिखे ...

ब्राम्हि लिपी

अशोक तपासे

पुरिस-दम्म प्रकाशन

© हर्षदा तपासे

पुरिस-दम्म प्रकाशन

+91 9930 112 113
+91 9969 112 113
+91 8879 112 113

piyadassi.asok@gmail.com

मनोगत

भारतकी एक बहुत पुरानी लिपी हम सिखने जा रहे है । इस लिपी को इंग्लिश संशोधकोंने ब्राम्हि लिपी इस नामसे पहचाना ।

ब्राम्हि भारतकी सर्वाधिक प्राचिन आकलनीय लिपी है । आकलनीय प्राचिन लिपी कहना समर्थनीय इसलिये है की, इस लिपी के पुर्वकालमे भी लिपी जैसी कुछ लिखावट अनेक प्रकारोंमे पुरातत्वज्ञोंको प्राप्त हुई है । लेकिन इन लिखावटोंका आकलन होकर इनसे कोई अर्थबोध हो यह आजतक संभव नही हुवा है ।

ईसापुर्व करीब तीनसौ वर्षोंसे कुछ लिखावटोंमे अधिक साम्य देखने के कारण कुछ युरोपिय पुरातत्वज्ञ इसमे रुचि रखने लगे, और इसका संशोधन करनेका प्रयास करने लगे ।

सर जेम्स प्रिंसेप इस मुद्रा-तज्ञ को अठारहसौ सैंतिस मे इसमे यशस्विता मिली और केवल पुरातन

लिपीही नही बल्कि भारतीय उपमहाद्वीपका एक विस्मृत सम्राट अपने अनेक शिलालेखों व स्तंभलेखों सहित प्रकट हुवा । विश्वभर मे बौद्ध तत्वज्ञानका प्रचार-प्रसार करनेवाला, प्रजाहितदक्ष और सर्व संप्रदाय समन्वयक सम्राट प्रियदर्शी अशोक. सम्राट अशोक से पुर्वभी इस लिपी मे कुछ लिखे जानेके संकेत मिलते है, लेकीन इतिहास जिसे कभी भुला न पाये ऐसा लेखन केवल सम्राट अशोक के कार्यकालमे और निकटतम भविष्यमे लिखा हुवा पाया गया ।

समयके साथ इस लिपी मे अनेक बदलाव आये लेकीन पुरे महाद्वीपमे लिखावटमे असाधारण साम्य सम्राट अशोक के समयमे और निकटतम भविष्यमे देखा गया । ब्रिटीश पुरातत्वज्ञोंने इसे अशोक ब्राम्हि लिपी इसी नाम से प्रसिद्ध किया । इस कालखंड के पश्चात भारत मे लेखन शास्त्र का समर्थनीय विकास होता गया । इसी लिपी की कोख से इस महाद्वीप मे अनेक लिपीओंने जन्म लिया । आज यही लिपी

भारतकी समुची लिपीयों की जननी कहलाती है । पुना के एक संशोधक डॉ. अनिर्वाण दाश इसे धम्मलिपी कहते है ।

भारतके सभी राज्यों की प्रजा को अपनी मातृभाषा के प्रति अनन्यसाधारण आदर होता है । यह आदर भाव कभी कभी ऐसी नोकपर पहुंचता है की, अन्य राज्योंकी भाषाही नही बल्की राष्ट्रभाषा के लिये भी आदर मे कमी महसुस होती है । कुछ कामके लिये अनेक राज्यों मे घुमने फिरने वाले लोगोंको इस बातका अधिक कडवा अनुभव होता है । जहाँ देखो वहाँ केवल स्थानिक भाषा के फलक । और छोटे कस्बे के स्थानिक लोग मातृभाषा के सिवा अन्य भाषा समझते भी नही । ऐसे मे लगता है की भारतको एकात्मता के लिये जैसे राष्ट्रभाषा की जरुरत है उससे अधिक जरुरत है एक राष्ट्रलिपी की, जो सभी भारतीयों को अपनीसी लगे । सभी भारतीय इसे अवश्य सिखें, कम से कम अपनी भाषा ही इस लिपी मे लिखना पढना सिखें ।

देशभर मे सामान्य जानकारी फलकोंपर इस लिपी मे भी लिखी जाय । भारतकी समुची लिपीयों की जननी होने के नाते यह सम्मान केवल ब्राम्हि लिपी का ही हो सकता है ।

तथागत बुद्ध का धम्मोपदेश सर्वप्रथम इसी ब्राम्हि लिपीमे पालि भाषा मे लिखा गया । भगवान महावीर का संदेश भी मागधी भाषामे इसी ब्राम्हि लिपी मे लिखा गया । इन महान तत्वोंको पढने-समझने के लिये हम पालि तथा मागधी जैसी प्राचिन भाषा सिखते है । तो क्या भारतकी इस प्राचिन लिपी को सिखने के लिये ऐसे किसी कारण की आवश्यकता है ?

आओ .... सिखते है, ब्राम्हि लिपी ।

अशोक तपासे

सम्राट अशोक जयंती
चैत्र शुक्ल अष्टमी बुद्धाब्द २५६०
मंगलवार, ४ एप्रिल २०१७

सर जेम्स प्रिन्सेप

इस ब्रिटीश मुद्रा-तज्ञने ब्राम्हि लिपीको सर्वप्रथम १८३७ मे आकलन किया ।

सम्राट अशोक के अभिलेखों के अनुवाद पढे,
और इन शिलालेखों के वास्तव स्वरुप कैसे है
इस बातकी जिज्ञासा बढने लगी ।
शिलालेखों के वास्तविक रेखाचित्र
संगणक महाजाल पर देखे ।
इनसे ब्राम्हि लिपी का अनुकलन होने लगा और
इन शिलाओं व स्तंभोंको प्रत्यक्ष देखनेकी
मनिषा से मन विभोर हो गया ।
प्रखर प्रयत्न और कठीनतम सफर करते हुवे अधिकांश
संभव शिलालेख व स्तंभ प्रत्यक्ष देखें ।
इस सारे सफर मे हर प्रकार की असुविधा का सामना
करुते हुवे जिसने मेरा उस्फुर्त साथ दिया,
वो है मेरे जीवनसफर की साथी "हर्षदा"
यह छोटी पुस्तिका उसी को समर्पित ।

- अशोक तपासे

पुर्वपाठ

ब्राम्हि लिपी भारतीय महाद्वीप के अनेक लिपीओंकी जननी है यह बात हम जान चुके है । इससे यह बात तो निश्चित है की इस महाद्वीपकी लिपीयोंकी जो प्रमुख विशेषताएं है, इस लिपी मे भी होगी । इस लिपी मे स्वर तथा व्यंजनों के लिये स्वतंत्र चिन्ह है मगर व्यंजनमे अंकित स्वर अलगसे लिखने के बजाय व्यंजनकोही एक लघु चिन्ह जोडकर लिखते है । इस लघु चिन्ह को हम हिन्दी मे मात्रा कहते है ... जैसे आ की मात्रा, इ की मात्रा, उ की मात्रा । इस पढाईमे हम इन लघु चिन्हों को मात्रा कहे यही सुलभ होगा ।

जब दो या अधिक व्यंजनोंका उच्चारण एकसाथ जोडकर होता है तो पहला और दुसरा व्यंजन एकके नीचे दुसरा जोडकर लिखा जाता है इसे संयुक्ताक्षर या जोडाक्षर कहते है ।

लिपी की इस विशेषता को इंग्लीश मे Abugida या Alphasyllabary कहते है ।

ब्राम्हि वर्णमाला

पालि तथा प्राकृत भाषा के व्याकरण अनुसार इस लिपी मे इकतालीस अक्षरचिन्ह थे जो आठ स्वर तथा बत्तीस व्यंजन और एक छोटेसे अनुनासिक चिन्ह के लिये उपयोजीत थे । परंतु समय के साथ इस लिपी मे नयी विकसित भाषाएँ लिखी जाने लगी । इन भाषाओंकी सुविधा के लिये दो और स्वर, ऐ तथा औ, और दो नये व्यंजन, श तथा ष के लिये कुल चार अक्षर चिन्ह जोडे गये । इस तरह इस लिपी मे दस स्वर, चौतिस व्यंजन और एक अनुनासिक, कुल मिलाकर पैंतालिस अक्षर-चिन्होंका आयोजन हुवा ।

ब्राम्हि वर्णाक्षर (स्वर)

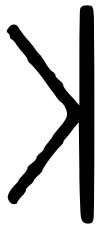 अ	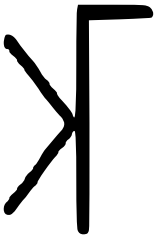 आ
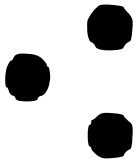 इ	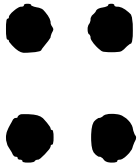 ई
उ	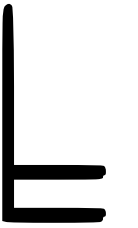 ऊ

ब्राम्हि वर्णाक्षर (स्वर)

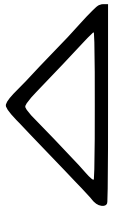 ए	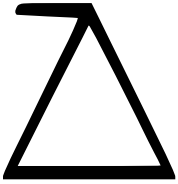 ऐ
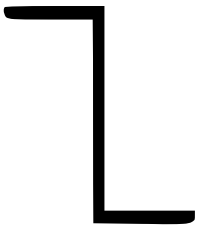 ओ	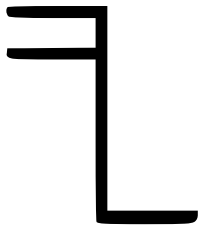 औ
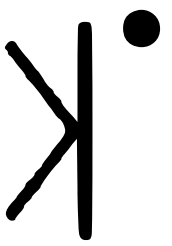 अं	अ के सिवा बाकी नौ स्वर भी अनुनासिकांकित होते है ।

ब्राम्हि वर्णाक्षर – व्यंजन (कंठ्य)

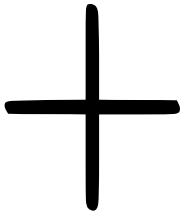 क	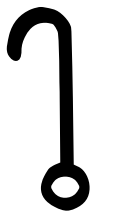 ख
ग	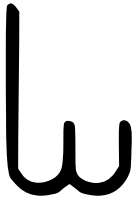 घ
ङ	

ब्राम्हि वर्णाक्षर – व्यंजन (तालव्य)

च	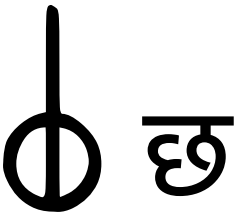 छ
ज	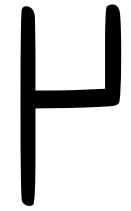 झ
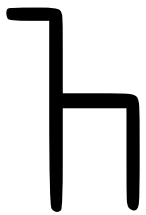 ञ	

ब्राम्हि वर्णाक्षर – व्यंजन (मुर्धन्य)

ट	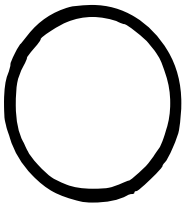 ठ
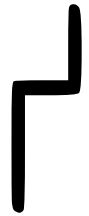 ड	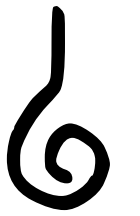 ढ
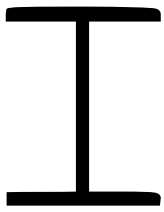 ण	

ब्राम्हि वर्णाक्षर – व्यंजन (दंतव्य)

त	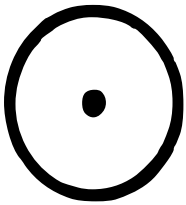 थ
द	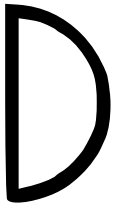 ध
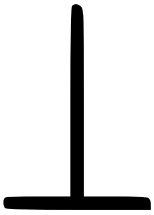 न	

ब्राम्हि वर्णाक्षर – व्यंजन (ओष्ठ्य)

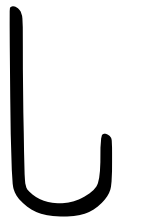 प	फ
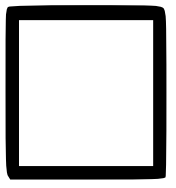 ब	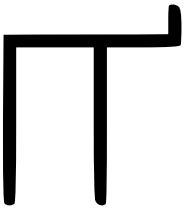 भ
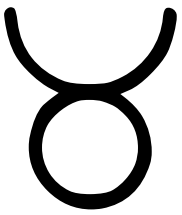 म	

ब्राम्हि वर्णाक्षर – व्यंजन

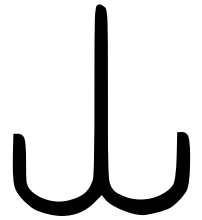 य	र
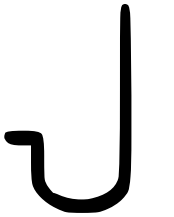 ल	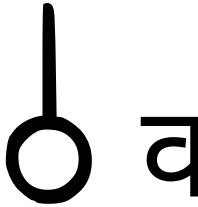 व
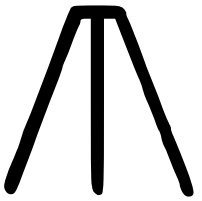 श	

ब्राम्हि वर्णाक्षर – व्यंजन

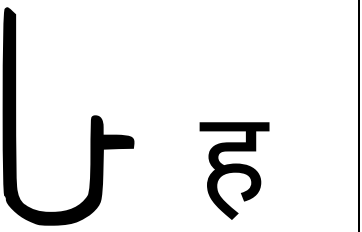	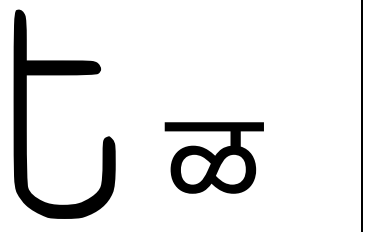

इस पुस्तिका मे छपे ब्राम्हि वर्णाक्षर

संगणक पर लिखने के लिये

“ Ashokan Bramhi Font ”

तैयार की गयी है ।

व्यंजन वर्णों का वर्गीकरण

जिन वर्णों के पूर्ण उच्चारण के लिए स्वरों की सहायता ली जाती है वे व्यंजन कहलाते हैं । ये संख्या में ३४ हैं । इसके निम्नलिखित तीन भेद हैं :

स्पर्श , अंतःस्थ और ऊष्म ।

स्पर्श - इन के पाँच वर्ग है और हर वर्ग में पाँच-पाँच व्यंजन हैं । हर वर्ग का नाम पहले वर्ण के अनुसार रखा गया है ।

- क वर्ग - क ख ग घ ङ (कंण्ठ्य)
- च वर्ग - च छ ज झ ञ (तालव्य)
- ट वर्ग - ट ठ ड ढ ण (मुर्धन्य)
- त वर्ग - त थ द ध न (दन्तव्य)
- प वर्ग - प फ ब भ म (ओष्ठ्य)

अंतःस्थ - य र ल ळ व

ऊष्म - श ष स ह

स्वरांकित व्यंजन

अबतक हमने ब्राम्हि लिपी के ४५ वर्णाक्षरों को देखा व समझा. मगर हमे यह ज्ञात है की इन ४५ वर्णाक्षरों मे ३४ व्यंजनों को प्रत्येकी १० (वास्तव स्वर १०, लेकिन अ यह स्वर अलगसे जोडना नही पडता, इसलिये स्वर ९ और १०वाँ अनुस्वार) स्वर जोडकर ३४ + ३४० (३४x१०=३४०) इतने स्वरांकित व्यंजन-अक्षर हमे सिखने होंगे । यही ३४० वर्णाक्षर लिखनेकी प्रक्रिया हम अगले कुछ पन्नोंमे सिखेंगे । संक्षेप मे व्यंजनों के आकार, इकार, उकार, एकार, ऐकार, ओकार, औकार और अनुनासिकांत रुप लिखना हमे अवगत करना है ।

आकार

किसीभी व्यंजनको आकारांत करने के लिये अक्षरचिन्ह मे स्थित खडी रेखा को उपरके अंत मे दाहीना ओर जानेवाली एक आडी रेखा लिखी जाती है । ब्राम्हि लिपी के कुल चौतीस अक्षरचिन्हों से तेरा चिन्होंमे मे उपरकी तरफ जानेवाली खडी रेखा नही, इसलिये इन व्यंजनोंको उपरी दाहीनी ओरसे दाहीनी तरफ आडी रेखा खिंची जाती है ।

आकार

	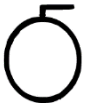			
		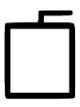	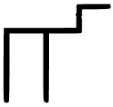	
	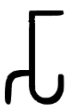	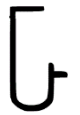	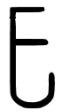	

इकार – ईकार

किसीभी व्यंजनको इ तथा दीर्घ ई की मात्रा लगाने हेतु पहले आकार की मात्रा रेखा खिंचकर उसके दाहीने छोर से उपरकी तरफ एक छोटी रेखा खिंची जाती है । दीर्घ ई की मात्रा के लिये आ की मात्राके दाहीने छोरपर नजदीक दो समांतर रेखांए खिंची जाती है ।

इकार

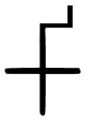				
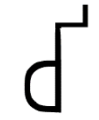			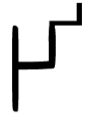	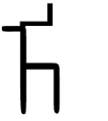
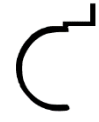				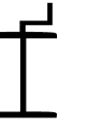
		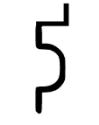		
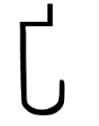				
	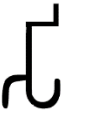	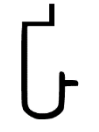		

ईकार

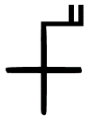				
			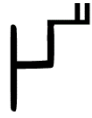	
		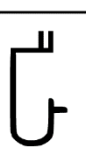		

उकार – ऊकार

किसी भी व्यंजन को उ की मात्रा जोडने के लिये अक्षरचिन्ह की खडी रेखा के निचले छोर से दाहीनी ओर एक छोटी रेखा खिंची जाती है। व्यंजन अक्षर-चिन्ह मे खडी रेखा ना होनेपर अक्षरको छुकर के निचेकी तरफ बिलकुल छोटी रेखा खिंचकर फिर दाहीनी ओर आडी रेखा खिंची जाती है ।

दीर्घ ऊ की मात्रा के लिये एक की जगह दो नजदीकी समांतर रेखांए खिंची जाती है ।

उकार

			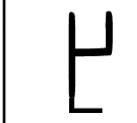	
	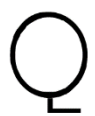	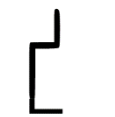		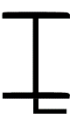
		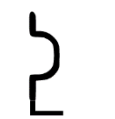	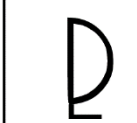	
		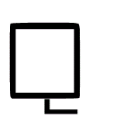	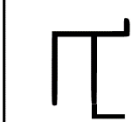	
		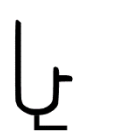	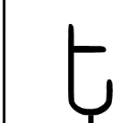	

ऊकार

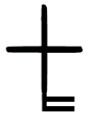				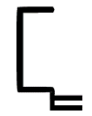
			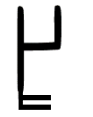	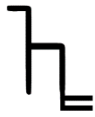
				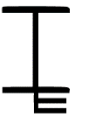
				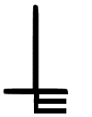
	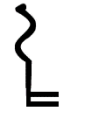			
	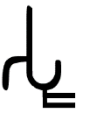	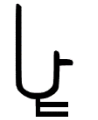		

एकार – ऐकार

किसीभी व्यंजन को ए की मात्रा जोडने के लिये आ की मात्रा जैसी व्यंजन के शिरोभागसे निकलने वाली लेकीन दाहीने से बायी ओर जाने वाली आडी रेखा खिंची जाती है । इसी तरह ऐ कि मात्रा के लिये ए की मात्रा समान अक्षर चिन्ह के शिरोभागसे दो नजदीकी समांतर आडी रेखाएँ दहीने से बायी ओर खिंची जाती है ।

एकार

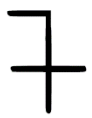				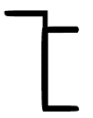
	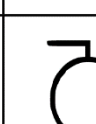		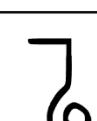	
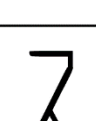	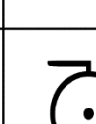		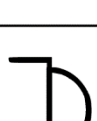	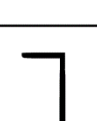
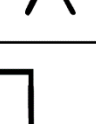	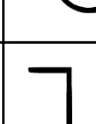			
	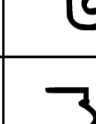	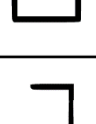	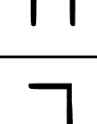	
			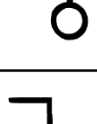	

ऐकार

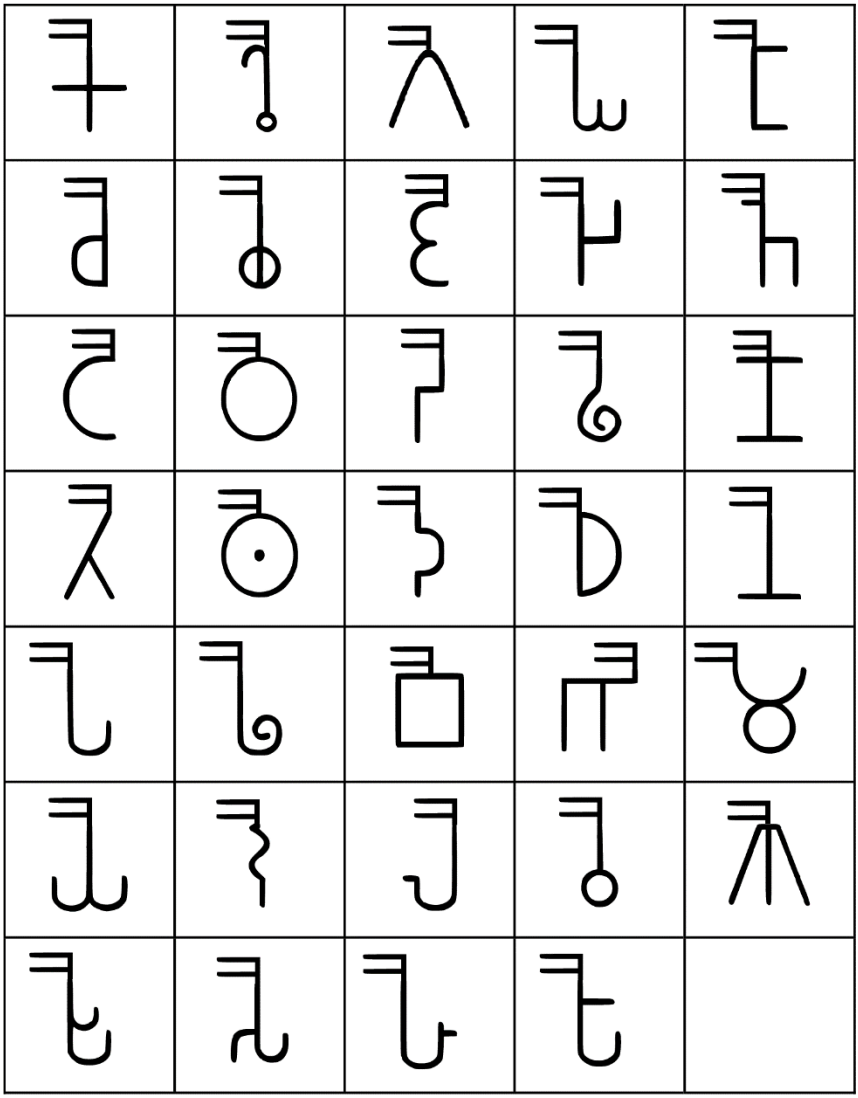

ओकार – औकार

अभी हमने ए की मात्रा देखी और कुछ पहले आ की मात्रा भी देखी है। अब एक आकार और एक एकार एक साथ लिखा जाय तो इसे ओ की मात्रा कहते है ।

इसी प्रकार एक आ की मात्रा और दो ए की मात्रा, या फिर युँ कहे की एक ए की और एक ऐ की मात्रा एक साथ लगाई जाय तो वह औ की मात्रा होती है ।

ओकार

	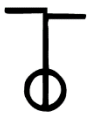			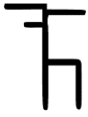
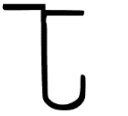				
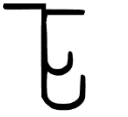		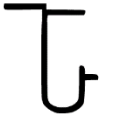		

औकार

	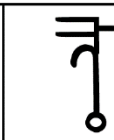	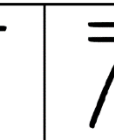	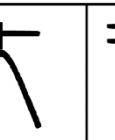	
	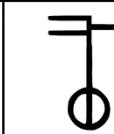	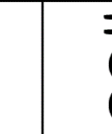		
		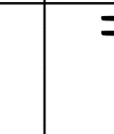		
	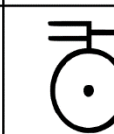	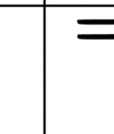		
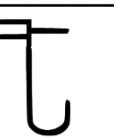	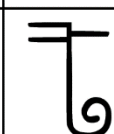		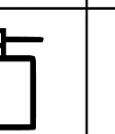	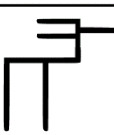
	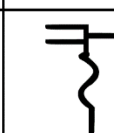			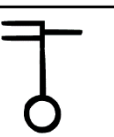
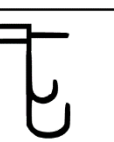	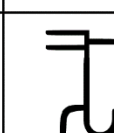	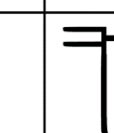	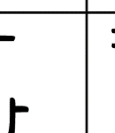	

व्यंजन अक्षर-चिन्ह के दाहीने शिरोभाग के नजदीक एक बिन्दु लगानेपर वह व्यंजन अनुनासिकांत होता है ।

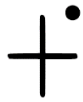				
			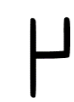	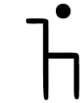
		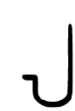		
	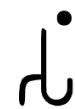	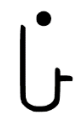	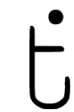	

संयुक्ताक्षर या जोडाक्षर

जब दो या अधिक व्यंजनोंका उच्चारण एकसाथ जोडकर होता है तो इसे संयुक्ताक्षर या जोडाक्षर कहते है । प्राकृत भाषा मे जोडाक्षर युक्त शब्द अल्प है । जो जोडाक्षर लिखे जाने है उनका सामान्य वर्गीकरण किया जा सकता है । प्राकृत भाषामे व्यंजनों के कंठ्य, तालव्य, मुर्धन्य, दन्तव्य, ओष्ठ्य इस तरह पांच वर्गो मे वर्गीकृत किया है । इन्हे क्रमशः क-वर्ग, च-वर्ग, ट-वर्ग, त-वर्ग तथा प-वर्ग भी कहते है । इसी वर्गीकरण को ध्यान मे रखते हुवे प्राकृत भाषा मे जोडाक्षरोंका वर्गीकरण लिपीबद्धताके हेतु किया जाता है ।

- एकही व्यंजन का दुगुना उच्चार. जैसे सक्क, पच्चुपन्न, संकप्प, अत्त ....

  ब्राम्हि लिपी मे अधिकतः यह जोडाक्षर लिखे नही जाते । बजाय इस दुगुने अक्षर की जगह एक ही अक्षर लिखा जाता था तथा पढते व

बोलते समय इस व्यंजन का दुगुना उच्चारण होता था ।

- एकही वर्ग के पहले व दुसरे व्यंजन का या तिसरे व चौथे व्यंजन का जोडा जाना. जैसे दुक्ख, गच्छ, मज्झिम, दीट्ठी, सब्बत्थ, बुद्ध, पुप्फ, गब्भ .....

  इन शब्दोंको ब्राम्हि लिपी मे जोडाक्षरों के साथ नही लिखा जाता था । बजाय इसके शब्दोच्चारण मे आनेवाला दुसरा व्यंजन ही लिखा जाता तथा पढते व बोलते समय इन दोनो व्यंजनोंका जुडा उच्चारण होता था । जैसे लुंबिनी स्तंभ पर बुद्ध शब्द बुध लिखा गया है । मगर पढते समय इसे बुद्ध पढना है ।

- शब्दोंमे भिन्न वर्ग के दो व्यंजन जब एक दुसरे को जोडे होते है तो इन्हे जोडाक्षर से लिखते है ।

इस प्रकार के लेखन पद्धति के कारण ब्राम्हि लिपी मे जोडाक्षरोंका लिखना अत्यल्प होता था ।

सम्राट अशोक के शिलालेखों मे निम्न जोडाक्षरयुक्त शब्द लिखे हुवे पाये है ।

पजुहितव्यं, समाजम्हि, आराभित्पा, नास्ति, सुस्रुसा, संस्तुत, धंमानुसस्टिया, द्वादस, परात्रा, स्वामिकेन, सम्यपतिपती, मोख्यमतं, अधिगच्य, सक्यमुनी, अभ्युंनमिसति .....

जोडाक्षर लिखते समय जिस अक्षरका उच्चार पहले होता है उसका कुछ छोटा अक्षर थोडा उपर लिखकर दुसरे उच्चार का अक्षर पहले अक्षर को जोडकर निचे लिखा जाता है ।

हम आज वर्तमान भाषा ब्राम्हि लिपी लिखते समय सारे संयुक्ताक्षर लिखेंगे । इससे लिपी और भाषा एक दुसरे से बंधी नही रहेगी । कोई भी भारतीय भाषा ब्राम्हि लिपी मे लिखी जा सकेगी ।

ब्राम्हि संयुक्ताक्षर

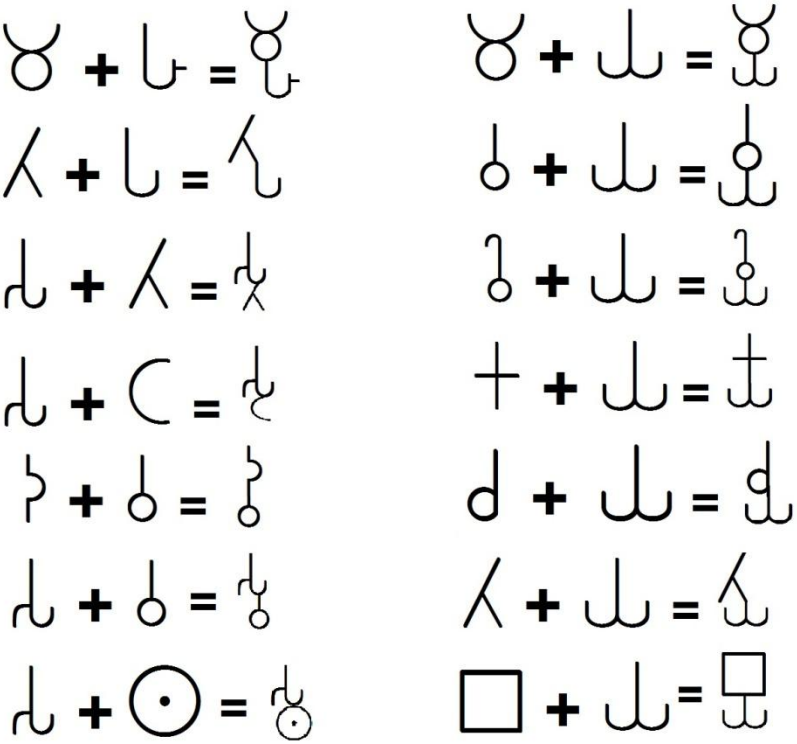

इसी प्रकार से हम जो चाहे संयुक्ताक्षर लिख सकते है ।

स्वरांकित व्यंजन-अक्षरों के बारे मे

कुछ अधिक ....

ब्राम्हि लिपी के अभ्यासकों के इस पुस्तिका मे दर्शाए उ और ऊ या स्वरोंसे अंकित व्यंजन अक्षर-चिन्हों पर आक्षेप हो सकता है । कारण यह है कि ब्राम्हि लिपी के अशोक कालीन लिखावट मे व्यंजनअक्षरों को उकारान्त तथा ऊकारान्त लिखने की पद्धति सभी व्यंजनोंके लिये समान नही थी । इसी तरहा आकार, ओकार, औकार लिखने की पद्धति भी सभी व्यंजनों के लिये एकरुप नही थी ।

एक बातको प्रबलतासे ध्यान मे रखना होगा की, ब्राम्हि इस उपमहाद्वीपकी शायद पहली संपुर्ण लिपी है । ऐसे मे इस लिपी का उपयोग भी संभवतः मर्यादित रहा होगा । किसी भी नवनिर्माण मे कुछ त्रुटीयों का रह जाना स्वाभाविक है ।

आज हम ब्राम्हि लिपी सिख रहे है, जब की विज्ञान तथा तंत्रज्ञान मे बहुत विकास हो चुका है । सांख्य-

तंत्रज्ञान (Digital) के इस युग मे लिपीयाँ भी संगणकी कृत हो रही है । आज के युवा भारतीय भाषा भी तोड-मरोडकर रोमन/लॅटीन लिपी मे लिखते है ।

महाराष्ट्र के नासिक शहर के पास महामार्गसे करीब पाडळी नामक एक गांव है । महामार्गपर इसका नामफलक है जिसपर देवनागरी मे पाडली तथा रोमन मे (PADALI) लिखा है । स्थनिक लोगोंके सिवा सभी लोग पहले रोमन अक्षर पढते है पादली या पाडली । मुंबई मे उत्तर पुर्व सीमापर बहुत पहले एक गांव था, मुळुंद. आज के मुंबईवासीयों को यह बात अजीब लगेगी. क्योंकी आज इस नामका कोइ कस्बा मुंबई मे नही है । रेल मार्गपर एक स्थानक जरुर है जिसका आजका प्रचलित नाम है मुलुंड. (www.mayboli.com गावाच्या नावांचा इतिहास)

ऐसा क्यों हुवा ? क्योंकी रोमन या लॅटीन लिपी के अक्षरोंमे और मानवी मुखध्वनी मे एक के लिये एक

ऐसा रिश्ता नही है । फिरभी हमारे युवाओंको भारतीय भाषा रोमन / लॅटीन मे लिखना क्यों अच्छा लगता है ? क्यों की यह लिखना संगणकिय होता है, केवल २६ चिन्होंके साथ लिखा जानेवाला । स्मार्ट फोन या फिर संगणक पर सारी भारतीय लिपीयाँ उपलब्ध है । लेकीन इसमे करीब करीब ४०० अलग अलग चिन्ह है और इन्हे लिखने के लिये करीब ५० कुंजीयाँ वाले पटलपर अनेक कुंजीक्रम ध्यान मे रखने पडते है ।

यही एक महत्वपुर्ण कारण है की, आज ब्राम्हि लिपी अवगत करते समय इसका अशोक कालीन स्वरुप जानना जितना जरुरी है उतनाही जरुरी है इसका आदर्श मानकीकरण करके इसमे वर्तमान भाषा लिखनेकी योग्यता होना । यह लिपी संगणकीय लिपी बनानी हो तो ऐसा मानकीकरण अत्यावश्यक है ऐसा मुझे प्रतित होता है । इसिलिये आकार, इकार, उकार, एकार, ऐकार, ओकार और औकार के चिन्हांकन सभी व्यंजनों के लिये एकरुप

होने चाहिए । इससे कोई संगणक-तंत्रज्ञ ब्राम्हि फॉण्ट की संरचना सुलभता से कर सकता है ।

अधिकाधिक लोग इस लिपी को समझे, इसे अवगत करें और उत्सुकतासेही सही इसका उपयोग भारतीय भाषाके सामान्य लेखन के लिये करें, यही उद्देश यह पुस्तिका लिखने के पिछे रहा है।

ब्राम्हि अंक

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९
·	–	=	≡	⫫	h	ɐ	ɾ	ㄣ	ʔ
·	ᒣ	ᒉ	ᒋ	ᒐ	ᒥ	ᒧ	ᒪ	ᒣ	ᒪ

१०	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०	९०	१००
∝	⊖	ᔑ	ᔕ	ᔓ	ᔐ	ᔖ	ᔘ	⊕	ᔥ

ब्राम्हि लिपी मे बडी संख्या के चिन्ह

१००	२००	५००	१०००	४०००

ब्राम्हि लिपी मे लिखे कुछ आसान पालि शब्द

कंकच	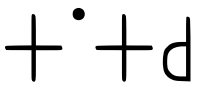	कवच
खग	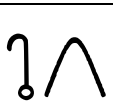	पक्षी
गगन		आकाश
घटीका	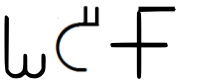	सुराही
चक्क		चक्का, चक्र
छत्त		क्षात्र
जगती		पृथ्वी
झसो	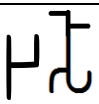	मछली
टंक	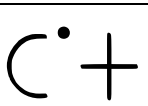	छिनी
ठपन		स्थापन
डहन	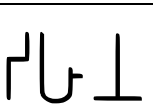	जलाना

पकतिक	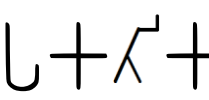	प्राकृतिक
फरुस	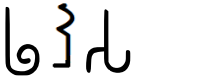	कठोर
बदरा		कपास
भगवा		दिप्यमान
मकुल		कली
यतन		प्रयत्न
रचना	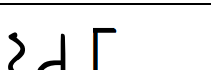	रचना
लवन		काटना
वचन		शब्द
सकल	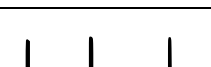	संपूर्ण
हदय	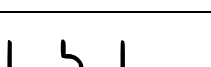	हृदय

ब्राम्हि लिपी मे लिखे

बुद्धवग्ग – सुत्त क्रमांक १०,११,१२,१३,१४,१५

ब्राम्हि लिपी मे लिखी बुद्धवंदना

पिछले पन्नेपर सिखी बुद्धवग्ग की छः सुत्त संगणकिय अक्षरों के उपयोग से लिखी थी । उपर बुद्धवंदना हाथ से लिखी है ।

सम्राट अशोक स्तंभ , इसिपतन मृगदाय , सारनाथ - मुळ ब्राम्हि लेख रेखाचित्र

दाहीने और बाये ओर के अक्षर
पतले और उंचे लग रहे है,
क्यों की यह रेखाचित्र सारनाथ स्तंभ के
दंडगोलाकार पृष्टभाग के प्रत्यक्ष छायाचित्र से
संगणकिय प्रक्रियासे निर्मीत है ।

GIRNÂR ROCK
in Kâthiâwâd

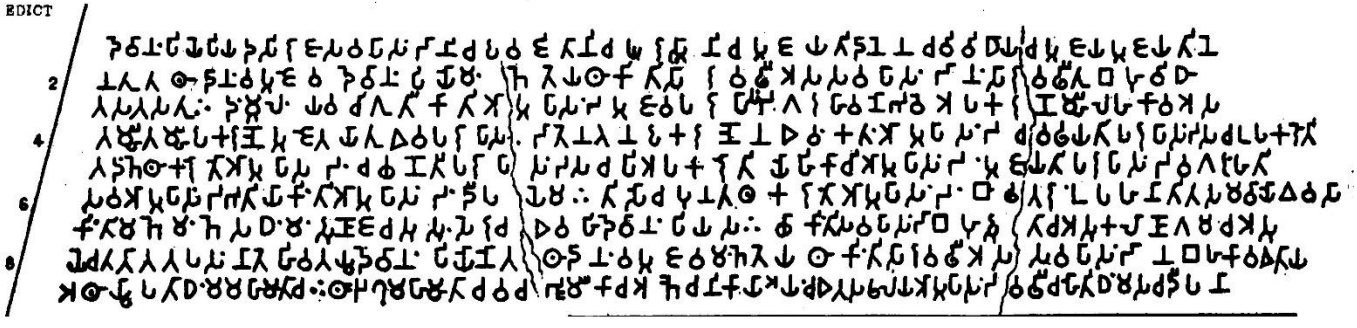

गिरनार, जुनागढ येथील १४ शिलालेख श्रृंखलेतील १२ व्या शिलालेखाचा
ॲलेक्झँडर कनिंगहॅम यांनी तयार केलेला छाप.
आत्पपासंडा या शब्दातील जोडाक्षर त ला प जोडण्या ऐवजी प ला त जोडले आहे.
व्यापता या शब्दात मात्र व ला य जोडलेले दिसत आहे.

ब्राम्हि लिपीच्या संदर्भ मे दोन विशेष किस्से

१. ब्राम्हि लिपीत 𑀑𑀁 लिखते है 𑀤𑁆 ऐसे या 𑁏 ऐसे ।

देवनागरी लिपी मे ॐ हे अक्षर लिखा जाता है, जिसका उच्चारण “ओं” लेकीन बहुत दीर्घ और कंपनयुक्त किया जाता है । इस उच्चारण को भारतीय संस्कृती मे पवित्र माना जाता है । ब्राम्हि लिपी मे ओ अक्षर 𑀒 ऐसे लिखा जाता है । ओं इस उच्चारण के लिये एक बिंदु (अनुस्वार) 𑀒𑀁 लिखा जाता है । दीर्घ उच्चार आणि कंपन दिखाने के लिये यही अक्षर दोहरा परंतु समकोण मे (चक्राकार स्वरुप) लिखा जाता है 𑀤𑁆 ऐसे । चारो ओरसे समानता के लिये दो बिंदु अधिक लगाकर यह अक्षर 𑀤𑁆 ऐसे होता है । यही अक्षर कई बार 𑁏 ऐसे भी लिखा जाता है । सम्राट अशोक के जौगड शिलालेखों मे यह दोनो चिन्ह दिखाई देते है ।

देवनागरी अक्षर ‘ढ’ और हिन्दी एकाक्षरी शब्द ‘ढ’

पाठशाला मे कोई विद्यार्थी जब बार-बार समझाने पर भी अपना पाठ समझता न हो तो उसे ‘ढ’ कहते है । क्यों ?
यह करीब २३०० साल पहले

अशोक ब्राम्हि लिपी का अक्षर - 𑀝 - ढ
यह करीब १६०० साल पहले

गुप्तकालीन ब्राम्हि लिपी का अक्षर -𑌢 - ढ
यह करीब १३०० साल पहले

सिद्धम लिपी का अक्षर - 𑖝- ढ
यह करीब १५०० साल पहले

नागरी लिपी का अक्षर - ढ- ढ
यह करीब १२०० साल पहले

नंदनागरी लिपी का अक्षर - ढ- ढ
और हम जो देवनागरी लिपी लिखते है
जिसका उदय करीब १००० साल पुर्व हुवा है ,
इस लिपी मे . . . . . - ढ
इन सभी अक्षरों मे साम्य देखा ?
करीब १३०० वर्ष जो बदल न सका

और २३०० सालो बाद भी जो वैसाही है, वह - **ढ**

ब्राम्हि से देवनागरी तक लिपी उत्क्रांती

ब्राम्हि (अशोका)	ब्राम्हि (चंद्र गुप्ता)	सिद्धम	शारदा	नागरी	देवनागरी
इ.स.पु. ३००	इ.स. ४००	इ.स. ५५०	इ.स. ७५०	इ.स. ८००	इ.स.१०००
					अ
					आ
					इ
					ई
					उ
					ऊ
					ए
					ऐ
					ओ
					औ
					अं
					क
					ख
					ग
					घ
					ङ

ब्राम्हि (अशोका)	ब्राम्हि (चंद्र गुप्ता)	सिद्धम	शारदा	नागरी	देवनागरी
इ.स.पु. ३००	इ.स. ४००	इ.स. ५५०	इ.स. ७५०	इ.स. ८००	इ.स.१०००
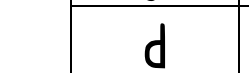	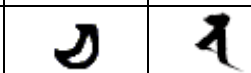		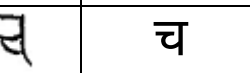		च
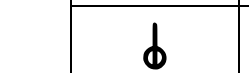	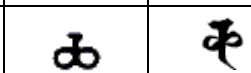	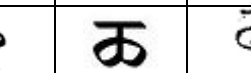	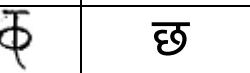		छ
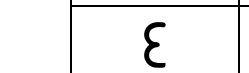	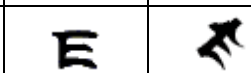	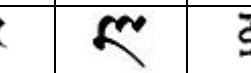	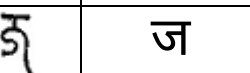		ज
	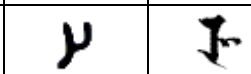		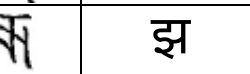		झ
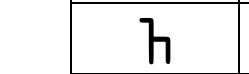	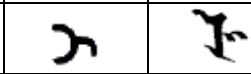		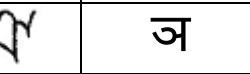		ञ
					ट
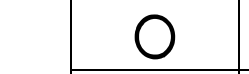	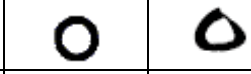		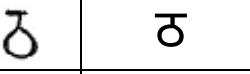		ठ
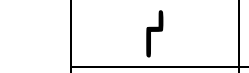	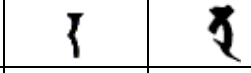	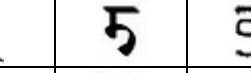	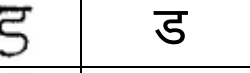		ड
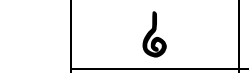	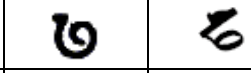	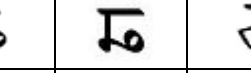	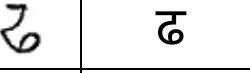		ढ
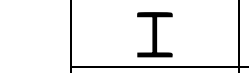	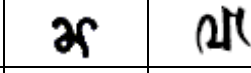	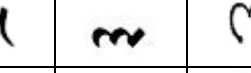	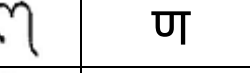		ण
					त
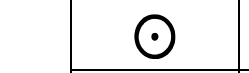	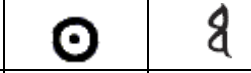	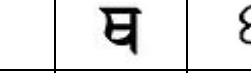	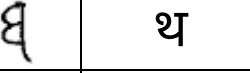		थ
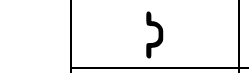	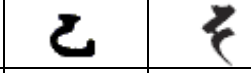		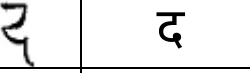		द
			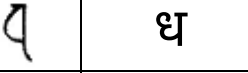		ध
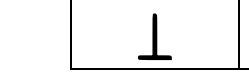	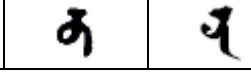	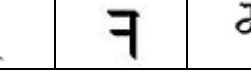	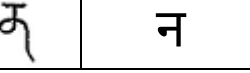		न

ब्राम्हि (अशोका)	ब्राम्हि (चंद्र गुप्ता)	सिद्धम	शारदा	नागरी	देवनागरी
इ.स.पु. ३००	इ.स. ४००	इ.स. ५५०	इ.स. ७५०	इ.स. ८००	इ.स.१०००
					प
					फ
					ब
					भ
					म
					य
					र
					ल
					व
					श
					ष
					स
					ह
					ळ

ब्राम्हि लिपीका संवर्धन

इस पुस्तक मे सम्मिलीत **स्वरांकित व्यंजन-अक्षरों के बारे मे कुछ अधिक ....** इस लेख मे लिखा है की, ब्राम्हि लिपी के अभ्यासकों के इस पुस्तिका मे दर्शाए उ और ऊ या स्वरोंसे अंकित व्यंजन अक्षर-चिन्हों पर आक्षेप हो सकता है । इसी लेख मे मैने इसका निराकरण भी किया है, लेकीन ये क्या आक्षेप है इसपर कोई टिप्पणी नही की है । वहाँ पर ब्राम्हि लिपीके प्राथमिक पाठ समझते हुवे ऐसी कोई टिप्पणी शायद कुछ बोझिल हो जाती । अब, ब्राम्हि लिपी के सभी अक्षर लिखने व समझने के बाद मै यह विवेचन कर रहा हुँ ।

केवल उ और ऊ ही नही, आ की मात्रा लिखनेकी पुरातन कालीन पद्धति सभी व्यंजनोंके लिये एकसमान नही थी । शिलालेखों को प्रत्यक्ष पढते हुवे यह बात आपको महसुस होगी ।

पहले हम व्यंजन अक्षरों को आ की मात्रा लिखने की विधीपर गौर करेंगे ।

ख, ग, ज, ट, ठ, थ, ध, ब ... इन व्यंजन अक्षरों को उपरी भाग से बाये से दायी ओर रेखा कहाँ खिंची जाय जिससे यह स्पष्टतासे आकार की मात्रा हो और व्यंजन अक्षर भी स्पष्ट बना रहे, इस मे कोई अनुरुपता नही थी । ख, ग, ठ, थ, ध इन व्यंजनों का उपरी भाग सीधा न होकर वक्राकार है । आकार रेखा इस वक्राकारके शिरोबिंदु से लेकर अक्षर मध्य तक कहीं भी खिंची जाती थी । ङ, ण, म इन व्यंजनोंको भी उपरी छोर से लेकर अक्षर मध्यतक कहीं भी खिंची जाती थी ।

उ तथा ऊ की मात्रा के लिये ख, घ, च, छ, ज, ट, ठ, ढ, ण, थ, ध, न, प, फ, ब, म, य, ल, व, ष, स, ह, ळ इन व्यंजन अक्षरोंको केवल एक छोटीसी खडी रेखा अक्षर के निम्नमध्य से (ऊ के लिये दो छोटी रेखाएँ) खिंची जाती थी । इन तेईस व्यंजन अक्षरों के लिये यह एक या दो छोटी रेखाएँ पर्याप्त हो सकती है लेकीन बचे हुए ग्यारह अक्षरों मे (क, ग, ङ, झ, ञ, ड, त, द, भ, र, श) ऐसा संभव नही है । अतः इन ग्यारह

अक्षरोंको एक छोटी खडी रेखा और इसके निम्नांतमे एक या दो आडी रेखा बायें से दायें खिंची जाती है ।

आकार की मात्रा के स्थान का संभ्रम इ तथा ई की मात्रा के लिये भी रहता है, क्यों की इ व ई की मात्रा के लिये खिंची जाती खडी रेखा आ की मात्रा खिंचकर उसके अंतमे खिंची जाती है ।

आकार की मात्रा तथा एकार की मात्रा लिखने की विधी कुछ कुछ समान ही है सिवाय यह की ए की मात्रा रेखा दाये से बाये खिंची जाती है । अतः आ की मात्रा स्थान का संभ्रम ए की मात्रा मे भी होता है ।

ऐ, ओ तथा औ की मात्रा मे भी आकार की मात्रा का संभ्रम बना रहता है ।

इन सभी बातोंमे न दिखने वाली एकरुपता दुर करने के हेतु हम ने सभी व्यंजनों के लिये एक समान स्वरांकन किया । ऐसी एकरुपता के लिये अक्षरोंके प्राचिन रुप को कहीं भी तोडा-मरोडा नही ।

संयुक्ताक्षर के लिये एक स्पष्टता यह बनाई है की, जिस व्यंजन का उच्चार पहले और अल्पावधी होता

है, उसे थोडासा उपर लिखकर उसे छुकरही दुसरे उच्चार का व्यंजन निचे लिखा जाय । दोनो अक्षरोंका आकार समान ही रहे परंतु परिणामी संयुक्ताक्षर अधिक बडा न हो इसलिये दोनोही अक्षर छोटे आकार के लिखे जाय । संयुक्ताक्षर को स्वरांकित करनेके लिये परिणामी संयुक्ताक्षर ही एक अक्षर मानकर उसे योग्य मात्रा उपर या निचे लिखी जाय ।

इस तरह की विधी मात्राएँ लिखने तथा संयुक्ताक्षर लिखने मे प्रमाण मान लिया जाय तो ब्राम्हि लिपी का यह रुप निःसंदेह अधिक शास्त्रशुद्ध होगा । इस शुद्धिकरण से ब्राम्हि लिपी संगणक द्वारा लिखने के लिये एक सशक्त Font का निर्माण अधिक आसान हो सकता है । ब्राम्हि लिपी के संवर्धन के लिये यह आवश्यक है । मुझे विश्वास है आप मेरी इस बातसे सहमत होंगे ।

छायाचित्र मे सम्राट अशोक के बृहद शिलालेख माला के नौवे शिलालेख की सोपारा मे मिली शिला के समीप मै खडा हुँ ।

यह शिला मुंबई के छत्रपती शिवाजी पुराणवस्तु संग्रहालय के भुतल मंजिल मे रखी हुई है ।

आज तक भारत मे करीब पैतीस जगहों पर सम्राट अशोक के शिलालेख तथा स्तंभलेख पाये गये है, और इनमेसे अठ्ठाइस मैने मेरी जीवनसाथी हर्षदा के साथ देखे है, इनकी तस्वीरे खिंची है ।

मुखपृष्ठ पर सारनाथ स्तंभ के अवशेषोंकी तस्वीर है जिसमे इस स्तंभपर अंकित लेख पढने योग्य अक्षत स्थितीमे दिखता है ।